Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

नेपाल देश के प्रचलित विभिन्न लोकगीतों का अध्ययन

Mohan Shova Maharjan[1], Dr. Rajesh Kelkar[2], Dr, Kedar Mukadam[3]

1 Research Scholar, Dept. of Vocal, Faculty of Perf. Arts, The Maharaja Siajirao university of Baroda
2 Dept. of Vocal, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Siajirao university of Baroda, Barodra
3 Assistant Professor Faculty of Performing Arts, The Maharaja Siajirao university of Baroda, Barodra

शोध सार

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा नेपाल में प्रचलित विभिन्न लोकगीतों का अध्ययन किया गया है। प्राचीन काल से ही अपनी अलग पहचान बनाने में सफल देश नेपाल, संगीत पक्ष में भी उतना ही सबल और सक्षम है। इस शोधपत्र के माध्यम से शोधार्थी संपूर्ण देश के विभिन्न जात तथा जातियों में प्रचलित लोकगीतों की जानकारी एकत्र करने की प्रयास कर रही है, जो इस शोधपत्र की भूमिका है। इस अध्ययन के अधीन शोधार्थी ने नेपाल में प्रचलित मुख्य जातियों तथा उनके गीतों का परिचय, गाने की पद्धति, गाने का स्थान व समय, उन गीतों में प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के वाद्यों के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है।

बीज शब्दः नेपाली संगीत, नेपाली जाति, लोकसंगीत, नेवार, दाफा संगीत।

भूमिका

नेपाल बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी और बहुआयामी राष्ट्र है। एशिया महादीप के मध्य भाग में अवस्थित देश नेपाल जो की चीन और भारत के मध्य अवस्थित सार्वभौम राष्ट्र है। क्षेत्रफल के आधार पर अत्यंत छोटा होते हुए भी इसकी भौगोलिक अवस्था, सांस्कृतिक गतिविधियां, विभिन्न जाति तथा जनजातियों की विशालता इसे महत्वपूर्ण बनाते हैं। सन् २०११ के जनगणना तथ्यांक के आधार पर यहां तीनों प्रांतो में १०० से अधिक जातियां और जातीय समूह है, जो चार भाषा परिवारों की १२३ से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोलते है।[1] इन विभिन्न जातियों के अंतर्गत मुख्य जातियाँ ब्राह्मण, क्षेत्री, नेवार, राई, लिम्बू, मगर, गुरुंग, भोटे, मिथिला आदि तथा इन सभी की उपजातियों का रेहवास है। यह सभी जातियाँ अपने–अपने कला–संस्कृति, रीति–रिवाज़, भाषा आदि को विभिन्न तरीके से दर्शाती हैं। इसी कारण नेपाल में लोकसंगीत के विभिन्न प्रकार अस्तित्व में आए हैं।

नेपाल के विभिन्न लोकगीत

विश्व के अन्य देशों के प्रचलित लोक–संगीत के समान नेपाल देश का लोक–संगीत स्वयं भी एक अलग पहचान रखता है। बहुसंख्यक जाति एवं जनजातियों के निवास स्थान के कारण विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाज़, पर्व, संगीत इत्यादि प्रचलन में है। प्रत्येक जातियों का जीवन निर्वाह भी अलग–अलग प्रकार से होता है। इसी कारण उनकी अपनी कला, संस्कृति और संगीत भी अलग–अलग है और उसका प्रस्तुतिकरण भी विभिन्न प्रकार से होता है।

नेवारी लोकगीत

नेपाल के विविध जातियों में से महत्वपूर्ण नेवार जाति है, जो आर्थिक रूप से एवं विविध कला संस्कृति से सुसंपन्न हैं। यह जाति संपूर्ण नेपाल के भू–भाग में यत्र–तत्र समूहगत रूप में निवास करती है। विशेषतः

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

काठमाण्डू, भक्तपुर, ललितपुर (पाटन) में इनका मुख्य निवास स्थान माना जाता है। परंतु आधुनिक काल में यह नेपाल के यत्र–तत्र क्षेत्र जैसे– नुवाकोट, रसुवा, धादिंग, मकवानपुर, रामेछाप, दोलखा, सिंधुपाल्चोक, काभ्रे इत्यादि क्षेत्र में भी फैले हुए हैं। नेपाली इतिहास में नेवार एक जात अथवा जाति न होकर विविध जातियों के मिश्रण से नेवार विभाजित हुई है। ऐसा उल्लेख किया गया है, क्योंकि काठमाण्डौ में लिच्छवियों (२२५ इ.सं. के बाद शुरु हुए शासन) के शासनकाल में पहले अनेक राजाओं ने राज्य किया था जो नेवार जाति के थे।[2] नेवारी समुदाय दो धर्मावलम्बियों में बंटा हुआ है। बुद्ध मार्गी और शैव मार्गी या हिन्दू धर्मावलम्बी, इसी कारण नेवार बहुधर्मावलम्बियों के रूप में जाने जाते है। नेवारी समुदाय की मातृभाषा नेवारी है, जिसे नेवारी लोग "नेवाः भाय" (भाषा) कहते हैं।

नेवारी समुदाय संपूर्ण नेपाल की कला, साहित्य, संस्कृति, गीत–संगीत, वाद्य–वादन इत्यादि विभिन्न जात्रा, मेला, महोत्सव, धार्मिक–कार्य, पर्व, त्यौहार इत्यादि में अहम् भूमिका निभाती है। नेवारी लोक–संगीत में प्रचलित मुख्य संगीत दाफा संगीत, बारहमासे गीत, तुतः और चचा (चर्या गीत) प्रमुख माना गया है। विभिन्न वाद्यों जैसे खीं, ताः, बभु बजाकर समुह में बैठ के गाया–बजाने वाले भजन–भक्ति संगीत को दाफा संगीत कहते हैं। दाफा संगीत शास्त्रीय रागों पर आधारित होता है। यह गायन मध्य काल (१३वीं शताब्दी के बाद) के मल्ल काल में ज्यादा प्रचलित गायन माना गया है। इसमे विशेषः 'ग्वारा' गायन होता है जो राग में निबद्ध होता है। दाफा संगीत को विशेष पर्वों, त्यौहारों के महीने जैसे– श्रावन, भाद्र, आश्विन, कार्तिक, माघ, फाल्गुन में प्रतिदिन गाया जाता है। दाफा संगीत ईश्वर की आराधना एवं स्तुति गायन है, जो भक्तिरस प्रधान होता है। दूसरा प्रचलित बारहमासे लोकगीत के अंतर्गत प्रत्येक महीने में विभिन्न राग में आधारित गीत गाने की परंपरा हैं जैसे– बैशाख में धनाश्री, जेष्ठ में देवगिरी, आषाढ़ में ब्यांचुली, श्रावन में मालश्री, भाद्र में सोरठ, आश्विन में केदार, कार्तिक में कोला, मार्गशीर्ष में विभाष, पौष में सारंग, माघ में वसंत, फाल्गुन में पथमंजली एवं चैत्र में चैती राग गाने की प्रथा है।[3]

नेवारी लोक–संगीत के अंतर्गत फागु गीत और वसंत गीत अत्यधिक प्रचलित गीत है। नेवारी समाज में फागु एक पर्व के रूप में मनाई जाती है। इस पर्व में काठमाण्डू लगायत भक्तपुर, ललितपुर के नेवारी जाति ८ मात्रा के विशेष प्रकार का "चो" ताल रचित गीत तथा वाद्य–वृंद प्रस्तुत करके नाच–गान करते हैं। फागु गीत में प्रायः वसंत ऋतु, फागुन मास, रंग–विरंग, प्रेम रस के विषय वस्तु के आधारित शब्द प्रयोग होता है। इस गीत को समूह में मिलकर गाया जाता है, जो अत्यंत सरल स्वर रचना में रचित होता है। वैसे ही वसंत गीत ऋतुकालीन गीत है, जिसको नेवार जाति वसंत पंचमी के दिन से गाते हैं। विभिन्न नेवारी दाफा समूह, भजन समुहों में वसंत की धुनें तथा गायन करते हैं। इस गीत की धुन सरल और मिठासपूर्ण होती है। वर्तमान समय में इस गीत को ज्यादातर आठ मात्रा के ताल में गाते हैं। यह शास्त्रीय राग वसंत से अलग है, जिसमें प्रायः शुद्ध स्वरों और कभी–कभी तीव्र स्वरों का प्रयोग होता है।[4] वसंत गीत में प्रायः वसंत ऋतुओं का वर्णन मिलता है जो श्रृंगार रस से भरपूर होता है।

इन सभी गीत प्रकारों में नेवारी जाति विभिन्न वाद्यों का प्रयोग करती है जैसे– खीं, मगखीं, धीमे, भुस्या, छुस्या, तिनछुक, मुहाली, पोंगा, बांसुरी, काँ, नयखीं इत्यादि।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

सेर्पा (सेब्रू गीत)

सेर्पा जाति द्वारा गाये जाने वाला गीत को सेब्रू या सेर्पा गीत कहते हैं। सेर्पा जाति का मुख्य स्थल नेपाल का पूर्वी हिमाली भाग है। सेर्पा जाति का पुर्खा मंगोलियन परिवार है, जिन्होंने प्राचीन काल में उत्तरी नेपाल से प्रवेश किया, जो तिब्बत से दक्षिण पूर्वी भाग पड़ता है। इस प्रकार नेपाल का पूर्वी सोलुखुम्बू जिला सेर्पा जाति का विशेष वास स्थल है। ठंडी जलवायु में रहने वाले सेर्पा जाति के लोग काफी मज़बूत और बलवान होते हैं, इसी जलवायु का असर इनके संस्कृति, रहन–सहन, पर्व–गीत और नृत्य में भी पड़ा है। सेर्पा जाति पूर्ण रूप से बौद्ध–लामा सम्प्रदाय की बौद्ध धर्मावलंबी जाति है। इस प्रकार सेर्पा जाति के संगीत सामजिक एवं धार्मिक दोनों प्रकार के मिलते हैं। इस जाति के संगीत एवं नृत्य अन्य जाति से नहीं बल्कि तिब्बती जाति से मिलता–जुलता होता है। गायन के साथ–साथ नृत्य भी किया जाता है। सेर्पा गीत की रचना ज्यादातर औड़व स्वरों में मिलता है और तार सप्तक में गाया जाता है। गायन के साथ नृत्य करने में पैरों को हल्का उठाकर ताल देकर गाने की परंपरा है। सेर्पा जाति में दो प्रकार के गायन होते हैः सामाजिक और धार्मिक गीत। सामाजिक गीत में प्रायः वाद्यों का प्रयोग नहीं किया जाता है जिसको 'लामो भाका' कहते है। दूसरा धार्मिक गीत में विभिन्न वाद्यों जैसे– ढयांग्रो, झ्याली, घंटा इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। सेर्पा जाति का विशेष पर्व ल्होसार (नया वर्ष), दुम्जे और मनिरिम्बू है, जिसमें दोनों प्रकार के गीत संगीत का प्रयोग किया जाता है।[5]

तामांग सेलो गीत

नेपाल में पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र में बसने वाले तामांग जाति के भाका (tune) को तामांग सेलो गीत कहते हैं। तामांग जाति का विशेष वास स्थान बागमती अंचल के आसपास से लेकर जनकपुर, सागरमाथा और कोशी अंचल तक है। कुछ तामांग जाति के लोग नेपाल के पश्चिम क्षेत्र में भी जीवन निर्वाह करते हैं।

तामांग गीत तामांग भाषा में गाया जाता है। यह गीत विशेष मेला, पर्व, जात्रा, विवाह एवं ब्रतवंध इत्यादि मंगलकार्यों में गाया जाता है। इस गीत को केवल पाँच स्वरों में औड़व जाति के भाका में गाते है इसलिए सुनने में एक रस लगता है। इस में लय आठ या चार मात्रा में होती है। जगह के आधार पर रचना अलग होती है परंतु लय एक ही प्रकार की बजाई जाती है। तामांग सेलो गीत के गान समय मुख्य वाद्य 'डम्फु' बजाया जाता है, जो इस जाति का मुख्य और प्रिय वाद्य माना जाता है। इसी प्रिय वाद्य 'डम्फु' के संग तामांग जाति विभिन्न पर्वों और त्यौहार में गायन के साथ–साथ नृत्य भी करते हैं। तामांग सेलो को एकल, युगल और जुहारी (समूह) में गाया जाता है। इसकी चाल नृत्य के समय द्रुत और गायन समय धीमी गति में गाया जाता है।[6] इस गीत की भाका सरल सहज होने की वजह से अन्य जाति जैसे– थारु और पर्वते जातियां भी गाते हैं। वर्त्तमान समय में विभिन्न भाषाओं में भी तामांग सेलो गाने लगे हैं, इसलिए पूरे देश में इस गीत की भाका प्रचलित है।

दमाई गीत

दमाई जाति का मुख्य स्थान पश्चिम नेपाल है फिर भी यह जाति संपूर्ण पहाड़ी भाग तथा अन्य भागों में निवास करती है। इस जाति का मुख्य पेशा कपड़ा सिलना और वाद्य–वादन करना है। दमाई जाति को जन्मजात ही संगीत प्रेमी माना जाता है। अतः इस जाति के कलाकार ज्यादा से ज्यादा पेशेवर होंगे ऐसा मानना उचित होगा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

दमाई गीत दमाई जाति द्वारा ही परंपरागत रूप में गाया जाता है, इसलिए इस गीत को 'दमाई गीत' कहा गया है। दमाई गीत नेपाली भाषा में ही गाया जाता है। गीत की भाषा सर्वसुलभ और सामान्य होने के कारण दमाई जाति के अलावा अन्य जातियों में भी प्रसिद्ध है। दमाई गीत की धुन विशेष रूप में दमाई जाति के चाड पर्व, शुभकार्य विवाह, ब्रतवंध इत्यादि में और अन्य जातियों द्वारा खेती एवं शुभकार्य इत्यादि में मंगलसूचक गीत के रूप में गाया–बजाया जाता है, जो वर्तमान समय तक विद्यमान है। यह गीत चार या आठ मात्रा में रचनाबद्ध होता है। यह गीत वाद्य–प्रधान है। इस गीत का मुख्य वाद्य पञ्चे वाद्य और नौमती वाद्य है। पञ्चे वाद्य के अंतर्गत अनिवार्य रूप में शहनाई, टयामको, कर्णाल, नरसिं और झ्याली बजाई जाती है। इसी पञ्चे वाद्य में दूसरा वाद्य समावेश करके नौमती वाद्य बजाया जाता है।[6]

मैथिलि गीत

नेपाल की प्रमुख भाषाओं के अंतर्गत मैथिली भाषा भी एक है, जो मिथिला की राजधानी जनकपुर अंचल, कोशी अंचल और नारायणी अंचल में बोली जाती है। मैथिली जाति द्वारा गाया जाने वाले मैथिली लोकगीत अत्यंत प्राचीन माने जाते हैं। मैथिलि गीत पुरुषों से ज्यादा स्त्रियाँ गाती हैं। इन गीतों में विभिन्न समय और परिवेशों में मानव जीवन में घटित घटनाओं को अभिव्यक्त किया जाता है जैसे– बारहमासा, छौमासा, चौमासा, फगुवा, सोहर, बटबगनी, वसंत, छठ, झिझिया, समा चकवा, जटजटीन, डोमकछ इत्यादि। ऋतुकाल में वसंत, फगुवा इत्यादि गाया जाता है। स्त्रियों के विशेष चाड तीज और छठ में पर्वकालीन छठ गीत स्त्रियों द्वारा गाया जाता है। कजरी गीत भी विशेषकर स्त्रियाँ ही गाती है जो स्त्री मन की विरह वेदना से ओतप्रोत होता है। मैथिली गीतों में विशेष रूप से झाल, ढोलक, पिपही, सिंधा, डमरू, घंटा, डंका, नगाड़ा इत्यादि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।[7]

भैलो गीत

हेमंत ऋतु के आगमन समय कार्तिक मास में दीपावली पर्व में अमावस्या की रात लक्ष्मी पूजा में भैलो गीत गाया जाता है। यह नेपाली हिंदुओं का महान चाड है। दीपावली के समय में ही गाया जाने वाले इस गीत को पर्व गीत मान सकते हैं। लक्ष्मी पूजा की रात को स्त्रियाँ मिलकर घर–घर जाके भैलो गीत गाया करती हैं, जिसे 'भैलो खेलना' कहते हैं। इस गीत की भाका को लंबा खींच के गाने की परंपरा है। इस गीत में लक्ष्मी माँ का वर्णन, भला शब्दों का प्रयोग करके आशीर्वचन के रूप में गाया जाता है। भैलो गीत केवल स्त्रियाँ ही गाती है परंतु अभी पुरुषों द्वारा गायन करने की परंपरा बन रही है। महान चाड होने से पूरे नेपाल में इस गीत को गाया जाता है। यह राष्ट्र भाषा नेपाली में गाया जाता है। भैलो गीत बिना वाद्य तथा वाद्यों के साथ जैसे– मादल, मुरली, मुर्चुंगा इत्यादि के साथ गाते हैं। इस गीत में छः तथा आठ मात्रा का ताल प्रयोग किया जाता है।[8] धार्मिक परंपरा के अंतर्गत भैलो गीत गाने वाली स्त्रियों को साक्षात लक्ष्मी के समान मानते हैं इसलिए उन समूहों की अच्छे फल, फूल, सेल (रोटी), अन्न से विदाई करते हैं।

धिमाल गीत

नेपाल में धिमाल जाति पूर्वी स्थान कोशी और मेची अंचल के झापा जिला में अधिकांश निवास करती है। इस जाति की संस्कृति और भाषा राई और लिम्बू जाति के साथ मेल खाती है। यह एक पिछड़ी आदिवासी जाति है। यह जाति जंगल के आसपास रहना पसंद करती है। धिमाल जाति की अपनी ही अलग सी संस्कृति, परंपरा,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

भाषा, संगीत आदि प्रचलित है। धिमाल जाति का अलग भाका गाने की परंपरा है, जिसे 'धिमाल गीत' कहते हैं। इस गाने में यह जाति अपने सुख–दुख, खुशी, उमंग, वेदनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। धिमाल गीत में 'साल्व शाय शाय' गीत पूरे नेपाल में प्रचलित माना जाता है। यह एक गाने में थेगो है जो बार–बार दोहरा के गाया जाता है। गाने के साथ–साथ नृत्य भी करने की चलन है। महान पर्व दीपावली में यह जाति इसी गीत को गाकर देउसी भैलो खेलने गाने जाते है। यह छः मात्रा में निबद्ध गाना है, जो विभिन्न वाद्यों के साथ गाया जाता है। जैसे– सेरेन्जा, च्याब्रुंग, डिंगा (ढोल), मानर (एक प्रकार का मादल), उर्नी, दोदरा इत्यादि।[9]

लोक दोहोरी

लोक दोहोरी गीत 'युगल गीत' है जो नेपाल के पूर्वी स्थान से लेकर पश्चिम स्थान तक गाया जाता है। इसमें दो समूह होते हैं स्त्रियों का समूह और पुरुषों का समूह। दोनों समूह आमने–सामने बैठकर यह गीत गाते हैं। इसका प्रारंभ पुरुषों से किया जाता है और उसके बाद स्त्रियों के गाने की परंपरा है। यह संगीत में मुख्य गीतों के शब्दों द्वारा प्रश्नोत्तर करके जुहारी की तरह गाया जाता है। इस गीत का गान वे लोग कर सकते हैं जिनमें तत्काल शब्द–रचना करने की क्षमता हो। लोक दोहोरी गायन एक–दो दिन न कर पूरे सप्ताह खेला (गाया) जाता है। इस गायन को स्पर्धा के रूप में खेला जाता है और विजयी को पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। यह संगीत देश में ही नहीं, विदेशों में भी प्रख्यात है। यह गायन समान लय में अंतिम समय तक गाया जाता है, जिसमें नेपाल का प्रमुख लोक वाद्य मादल के संगत में गाया जाता है। लोक दोहोरी में प्रेम–प्रसंग, सामाजिक–स्थिति, आर्थिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष, रूठना, मनाना इत्यादि प्रसंगों को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।[10] इन्ही प्रसंगों के शब्द संरचना को सुनने के बाद दर्शक एवं श्रोता अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनोरंजन प्राप्त करते है। यह लोक दोहोरी गीत पूरे नेपाल में प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

विश्व के अन्य देशों के प्रचलित लोक–संगीत के समान नेपाल देश का लोक–संगीत स्वयं भी एक अलग पहचान रखता है। बहुसंख्यक जाति एवं जनजातियों के निवास स्थान के कारण विभिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाज़, पर्व, संगीत इत्यादि प्रचलन में है। प्रत्येक जातियों का जीवन निर्वाह भी अलग–अलग प्रकार से होता है। इसी कारण उनकी अपनी कला, संस्कृति और संगीत भी अलग–अलग है और उसका प्रस्तुतिकरण भी विभिन्न प्रकार से होता है। इन लोकगीतों की भाषा बोली, गाने की पद्धति, तालों का प्रयोग, लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्यों के प्रयोग एवं वर्तमान समय में लोकगीतों व्यापकता अपने आप में वैचित्रपूर्ण है।

संदर्भ

1 Bandhu, C. M. (2073 B.S). Aspects of Nepali Folklore. Nepal Academy, First Edition kamaladi Kathmandu, page no. 13 2073 B.S
2 आचार्य, बाबुराम. (वि. सं. 2018). प्राचीन काल नेपाल. अंतर्राष्ट्रीय मंच छापाखाना प्रा. लि., काठमांडौ, पृ. 65 वि.सं. 2018
3 कारंजीत, मंगला. (1995). ऋतु मे. बारहमासे मेया अध्ययन. नेपाल भाषा मिसा खलः, पृ. 21–22 12जी रनसल, 1995
4 जंगम, दीपक. और रावल, बेनी. (2000). संगीत सुरभि. भृकुटी पुस्तक तथा मसलंद भंडार, प्रदर्शनीमार्ग, काठमांडौ, पृ. 131 छवअमउइमत 2000

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

5 जंगम, दीपक. और रावल, बेनी. (2000). संगीत सुरभि. भृकुटी पुस्तक तथा मसलंद भंडार, प्रदर्शनीमार्ग, काठमांडौ, पृ. 133 नवंबर 2000
6 तिवारी (लोहानी), शोभा. (वि. सं. 2060). लोकसंगीतार्पण. साझा प्रकाशन, ललितपुर, पृ. 65 वि.सं. 2060
7 जंगम, दीपक. और रावल, बेनी. (2000). संगीत सुरभि. भृकुटी पुस्तक तथा मसलंद भंडार, प्रदर्शनीमार्ग, काठमांडौ, पृ. 132 छवअमउइमत 2000
8 तिवारी (लोहानी), शोभा. (वि. सं. 2060). लोकसंगीतार्पण. साझा प्रकाशन, ललितपुर, पृ. 70–71 वि.सं. 2060
9 तिवारी (लोहानी), शोभा. (वि. सं. 2060). लोकसंगीतार्पण. साझा प्रकाशन, ललितपुर, पृ. 68 वि.सं. 2060
10 Bandhu C. M. (2073 B.S). Aspects of Nepali Folklore. Nepal Academy, First Edition kamaladi Kathmandu, page no. 44 2073 B.S